B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-1
HISTORY
SUB./GEN
UNIT-2(II)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KR.MISHRA
DATE-14/09/2020

TOPIC- पुष्यमित्र शुंग की उपलब्धियाँ

(ACHIEVEMENTS OF PUSYAMITRA SUNGA:187-151BC)

PART-3

Scanned with CamScanner

पुष्यमित्र शुंग की उपलब्धियाँ

राजनीतिक क्षेत्र

मगध साम्राज्य पर अधिकार एवं उसका संगठन — पुष्यमित्र शुंग ने बुद्धि एवं शक्ति योजना के द्वारा मगध पर अधिकार किया और शुंग वंश की स्थापना की। उसके सामने दो समस्याएँ थीं – पहली, शेष साम्राज्य की सुरक्षा एवं दूसरी, खोये दूर प्रदेशों की विजय अथवा राज्य विस्तार। पाटलिपुत्र पर अधिकार करने के पश्चात् वह इस दिशा में प्रयत्नशील हो गया। कोशल, वत्स और अवन्ति पर अपनी पकड़ मजबूत की और अवन्ति राज्य में स्थित विदिशा को अपनी दूसरी राजधानी बनाया जिससे कि दूरस्थ प्रदेशों पर प्रभावकारी नियंत्रण रखा जा सके और विदिशा में अग्निमित्र को उपराजा नियुक्त किया। इसी प्रकार कोशल में भी उसने अपना एक प्रतिनिधि नियुक्त किया। इस प्रकार अपने प्रतिनिधियों को साम्राज्य के विभिन्न भागों में नियुक्त कर पुष्यमित्र ने राजनीतिक एकीकरण स्थापित करने का प्रयास किया।

विदर्भ से युद्ध — पुष्यमित्र शुंग का समकालीन विदर्भ का शासक यज्ञसेन था। विदर्भ में दरबारी गुटबंदी का लाभ उठाकर पुष्यमित्र ने यज्ञसेन के साथ संघर्ष किया जिसकी चर्चा 'मालविकाग्निमित्र' में हुई है। आगे उसके पुत्र अग्निमित्र ने विदर्भ राज्य से संघर्ष कर उसे पराजित किया। वहाँ के शासक को पुष्यमित्र की अधीनता स्वीकार करने को बाध्य किया।

यवनों से संघर्ष : पुष्यमित्र शुंग के समय यवनों का भारत पर आक्रमण हुआ। इस यवन आक्रमण की चर्चा कालिदास कृत 'मालविकाग्निमित्र' पतंजलि के 'महाभाष्य' एवं गार्गी संहिता से मिलती है। इस यवन आक्रमण के विरुद्ध पुष्यमित्र के पौत्र वसुमित्र ने युद्ध का नेतृत्व किया और यवनों को पराजित कर उन्हें मगध की ओर बढ़ने से रोका। इसके अतिरिक्त पुष्यमित्र ने पंजाब में जालंधर एवं स्यालकोट पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार पुष्यमित्र शुंग ने बिखरते मौर्य साम्राज्य को संगठित कर शुंग साम्राज्य का रूप दे दिया।

धार्मिक क्षेत्र :

पुष्यमित्र ने वैदिक धर्म की श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास किया। उसने पूजा, यज्ञ एवं बलि की प्रथा को पुनर्जीवित किया। यवन विजय के उपलक्ष्य में अश्वमेध यज्ञ करवाए जिसका प्रमाण धनदेव के अयोध्या अभिलेख से मिलता है। इस प्रकार पुष्यमित्र के समय में ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान हुआ। धार्मिक सहिष्णुता भी दिखायी। भरहुत एवं सांची के स्तूप में रेलिंग (वेदिका) का निर्माण करवाया।

सांस्कृतिक क्षेत्र :-

शुंगकाल में साहित्यिक क्षेत्र में नयी एवं महत्वपूर्ण रचनाएँ हुई। मनुस्मृति की रचना इसी समय आरंभ हुई जिसने वैदिक धर्म के अनुरूप समाज में ब्राह्मणों की श्रेष्ठता एवं वर्णव्यवस्था को दृढ़तापूर्वक स्थापित कर दिया। पतंजलि ने पाणिनी के अष्टाध्यायी पर अपनी महत्वपूर्ण टीका 'महाभाष्य' की रचना की। कला के क्षेत्र में भी इस काल में प्रगति हुई। मौर्यकालीन राज्यकला के स्थान पर शुंगकालीन 'लोक कला' का विकास हुआ। भरहुत एवं विदिशा के स्तूप शुंगकालीन कला का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करते हैं।

14/09/2020

Scanned with CamScanner